मूर्च्छना से संबंधित थाट

लेख : उदय शाह

पं. विष्णुनारायण भातखंडेजी ने हिन्दुस्तानी संगीत के रागों को १० थाट में वर्गीकृत किया था वो १० थाट इस प्रकार हैं।

बिलावल : सा रे ग म प ध नि
खमाज : सा रे ग म प ध नि
काफी : सा रे ग म प ध नि
आसावरी : सा रे ग म प ध नि
भैरवी : सा रे ग म प ध नि
भैरव : सा रे ग म प ध नि
कल्याण : सा रे ग म॑ प ध नि
मारवा : सा रे ग म॑ प ध नि
पूर्वी : सा रे ग म॑ प ध नि
तोड़ी : सा रे ग म॑ प ध नि

उपरोक्त १० थाट में से ६ थाट उनकी मूर्च्छना के आधार पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इन ६ थाट में बिलावल, कल्याण, खमाज, काफी, आसावरी और भैरवी थाट का समावेश होता है। इन ६ थाट में सिर्फ़ कल्याण थाट में मध्यम तीव्र प्रयुक्त होता है और बाक़ी सब थाट में मध्यम शुद्ध ही प्रयुक्त होता है।

एक थाट में ७ स्वर प्रयुक्त होते हैं। उपरोक्त ६ थाट में से किसी भी थाट के अलग-अलग सवर को षडज मानने से इन्हीं ६ थाट की प्राप्ति होती है तथा किसी एक स्वर से पंचम वर्जित दोनों मध्यम प्रयुक्त थाट की प्राप्ति होती है जो थाट रचना के नियम अंतर्गत न होने के कारन उसे ध्यान में लेने की ज़रूरत नहीं है। हिन्दुस्तानी संगीत में किसी भी थाट में सातों स्वरों के एक ही स्वरूप का प्रयोग किया जा सकता है। थाट रचना में षडज और पंचम तो अचल स्वर होने के कारन ये तो एक ही स्वरूप में प्रयुक्त किये जा सकते हैं मगर रिषभ, गांधार, मध्यम, धैवत और निषाद के शुद्ध और विकृत (कोमल या तीव्र) में से किसी एक ही स्वरूप को प्रयुक्त किया जा सकता है। इस तरह किसी भी थाट में उसकी मूर्च्छना

के आधार पर ७ स्वरों में से किसी एक स्वर से पंचम वर्जित दोनों मध्यम प्रयुक्त थाट की प्राप्ति होती है और बाक़ी ६ स्वरों से उपरोक्त ६ थाट की ही प्राप्ति होती है।

अब मैं यहां पर एक तालिका प्रस्तुत कर रहा हूं कि जिससे यह ज्ञात किया जा सकता है कि कौन-से थाट के कौन-से स्वर को षडज मानने पर कौन-से थाट को प्राप्त किया जा सकता है।

सा	रे	ग	म	प	ध	नि
कल्याण	खमाज	आसावरी	*	बिलावल	काफी	भैरवी
खमाज	आसावरी	*	बिलावल	काफी	भैरवी	कल्याण
आसावरी	*	बिलावल	काफी	भैरवी	कल्याण	खमाज
बिलावल	काफी	भैरवी	कल्याण	खमाज	आसावरी	*
काफी	भैरवी	कल्याण	खमाज	आसावरी	*	बिलावल
भैरवी	कल्याण	खमाज	आसावरी	*	बिलावल	काफी

(तालिका में '*' निशानी पंचम वर्जित दोनों मध्यम प्रयुक्त थाट को दर्शाती है।)

इस तालिका को याद रखने के लिए एक सूत्र को ही याद रखना होगा। उपरोक्त तालिका में कल्याण थाट के अलग-अलग स्वरों के अनुक्रम से जिन थाटों की प्राप्ति होती है उसी अनुक्रम के आधार पर हम सूत्र की रचना करेंगे।

कल्याण	खमाज	आसावरी	*	बिलावल	काफी	भैरवी
क	ख	आ	*	बि	का	भै

उपरोक्त सूत्र में बीच में '*' निशानी है और उसके दोनों ओर तीन थाट है कि जिसमें अनुक्रम से पहले तीन थाट में प्रयुक्त विकृत स्वर की संख्या १, १ और ३ है तथा अंतिम तीन थाट में प्रयुक्त विकृत स्वर की संख्या ०, २ और ४ है। इस बात को याद रखने से भी सूत्र को याद रखने में आसानी होगी।

उपरोक्त सूत्र से इन ६ थाट के किसी भी स्वर को षडज मानने पर कौन-से थाट प्राप्त किये जा सकते हैं यह आसानी से ज्ञात किया जा सकता है। जैसे कि काफी स्वर के षडज से तो काफी थाट ही मिलेगा मगर काफी थाट के रिषभ से निषाद तक कौन-से थाट प्राप्त किये जा सकते हैं यह जानने के लिए उपरोक्त सूत्र में काफी के 'का' से शुरू करके सातों अक्षरों को इस प्रकार लिख लीजिए।

का भै क ख आ * बि

(यह क्रम षडज से निषाद तक का है।)

इसका मतलब यह हुआ कि काफी स्वर के षडज से तो काफी थाट ही मिलेगा मगर काफी थाट के रिषभ से निषाद तक अनुक्रम से भैरवी, कल्याण, खमाज आसावरी, पंचम वर्जित दोनों मध्यम प्रयुक्त थाट और बिलावल थाट की प्राप्ति होती है।

अगर आपको जानना है कि आसावरी के गांधार और निषाद से कौन-से थाट की प्राप्ति होती है तो इसके लिए आसावरी के स्थान 'आ' को षडज मान कर वहां से गांधार और निषाद तक इस प्रकार गिनती करें।

क	ख	आ	*	बि	का	भै
ध	नि	सा	रे	ग	म	प

ऐसा करने पर गांधार के स्थान पर 'बि' और निषाद के स्थान पर 'ख' मिलेगा। इसका मतलब यह हुआ कि आसावरी के गांधार और निषाद से अनुक्रम से बिलावल और खमाज थाट की प्राप्ति होती है।

Uday Shah
(Singer – Music Composer – Poet)
Dadatattu (Sai) Street, Navsari – 396445, Gujarat – India.
Phone : (R) +912637255511 (M) +919428882632

Websites :
http://www.udayshahghazal.com/
https://sites.google.com/site/udayshahghazal/
https://sites.google.com/site/udayshahghazals/
https://sites.google.com/site/udayshahxyz/